

## Padma Shri



### **SHRI HEMCHAND MANJHI**

Shri Hemchand Manjhi is a famous traditional practitioner 'Vaidyaraj' of Narayanpur district, Chhattisgarh providing affordable healthcare to villagers for over 5 decades.

2. Born on 1<sup>st</sup> January, 1953 in a poor family, Shri Manjhi could go to school only for a day and due to house hold chores and family pressure, he left study and started grazing cattle. His father passed away in his childhood. To bear the responsibility of the family, he started working as a fire watcher in the nursery section of the forest department of the village.

3. During his working period, Shri Manjhi's health deteriorated significantly and there was no improvement in his health despite several treatments at the local level. Then one day he had a divine dream directing him to particular herbs of the forest for its solution. The next morning he set out towards the forest to search for these herbs and identified those herbs in the forest. He brought and prepared the herbs himself and quickly got good health benefits after its intake. Soon he started trying the same herb on other people too, due to which people's health started improving.

4. Shri Manjhi left the work of fire watcher and engaged himself in serving the people selflessly. He has been doing traditional health care since the age of 15-20 years. People come from every corner of the country for treatment of incurable disease. Thus on the basis of traditional knowledge, patients are being treated successfully. He is employing 20 people from the villages along with him by hiring for this work.

5. Shri Manjhi is now being recognized in the country for his selfless work.

## पद्म श्री



### श्री हेमचन्द मांझी

श्री हेमचन्द मांझी छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के एक प्रसिद्ध पारंपरिक वैद्यराज हैं जो 5 दशक से अधिक समय से ग्रामीणों को सस्ती स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रहे हैं।

- 1 जनवरी, 1953 को एक गरीब परिवार में जन्मे श्री मांझी केवल एक दिन के लिए स्कूल जा सके और घर के कार्यों और पारिवारिक दबाव के कारण उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और मवेशी चराने लगे। बचपन में ही उनके पिता का निधन हो गया। परिवार की जिम्मेदारी उठाने के लिए वह गांव के वन विभाग के नर्सरी अनुभाग में अग्नि चौकीदार (फायर वाचर) के रूप में काम करने लगे।
- अपने कामकाज के दौरान, श्री मांझी की तबीयत काफी बिगड़ गई और स्थानीय स्तर पर बहुत इलाज कराने के बावजूद उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। फिर एक दिन उन्हें एक दिव्य स्वप्न आया जिसमें उन्हें उपचार के लिए जंगल की विशेष जड़ी-बूटियों के बारे में बताया गया। अगली सुबह वह इन जड़ी-बूटियों की खोज के लिए जंगल की ओर निकल गए और उन जड़ी-बूटियों की पहचान की। उन्होंने स्वयं जड़ी-बूटियाँ लाकर तैयार कीं और इसके सेवन से शीघ्र ही भली प्रकार स्वस्थ हो गए। जल्द ही उन्होंने उसी जड़ी-बूटी को अन्य लोगों पर भी आजमाना शुरू कर दिया, जिससे लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा।
- श्री मांझी ने फायर वाचर का काम छोड़ दिया और निस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा में लग गए। वह 15-20 साल की उम्र से पारंपरिक उपचार कर रहे हैं। देश के कोने-कोने से लोग उनके पास लाइलाज बीमारियों का इलाज कराने आते हैं। इस प्रकार पारंपरिक ज्ञान के आधार पर मरीजों का सफलतापूर्वक इलाज किया जा रहा है। उन्होंने अपने साथ गांवों के 20 लोगों को इस काम में लगा रखा है।
- श्री मांझी को अब उनके निस्वार्थ कार्य के लिए देश-भर में पहचान मिल रही है।